शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल, इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग आगरा की पी०एच०डी० (शिक्षा) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

2022

शोध-निर्देशिका

डॉ० नीतू सिंह

शोधार्थिनी

मनोरमा सिंह

पेडागॉजिकल साइंसेज विभाग, शिक्षा-संकाय

दयालबाग एजुकेशनल, इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय),

दयालबाग आगरा-282005

1.0 प्रस्तावना

भारतीय समाज की संरचनात्मक व्यवस्था ने विभिन्नता में एकता को सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया है। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू, एक सकारात्मक एवं एक नकारात्मक होते हैं। उसी प्रकार भारतीय समाज में श्रेष्ठ होकर भी उसकी संरचनात्मक व्यवस्था में कुछ समस्याएँ विद्यमान हैं। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक इन समस्याओं को समझने एवं दूर करने हेतु समय-समय पर प्रयास किए गए हैं। अनेक परिवर्तनों एवं सुधारों के बाद भी भारतीय समाज में धर्म एवं जाति सम्बन्धी समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। इन जातिगत मनोवृत्तियों के कारण समाज का एक हिस्सा काफी समय तक सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर पा रहा था। समान शिक्षा एवं रोजगार प्राप्त करना निम्न जाति के व्यक्तियों के लिए सम्भव नहीं था। जाति सम्बन्धी भेद-भाव की जड़ें प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक भारतीयों में संघर्ष की स्थितियाँ एवं दूरियाँ उत्पन्न करती रही हैं।

भारतीय संविधान में सामाजिक संरचना सम्बन्धी सभी प्रकार की अव्यवस्थाओं को दूर करने हेतु कई प्रकार के प्रावधान किए गए। इन्हीं प्रावधानों में सबसे मुख्य प्रावधान निम्न जाति के व्यक्तियों के लिए किया गया, जिसमें उन्हें आरक्षण प्रदान कर उच्च जाति के समान शिक्षा एवं रोजगार के अवसर प्रदान किये गये। भारतीय संविधान द्वारा अस्पृश्यता का पूर्ण रूप से उन्मूलन किए जाने के बाद भी वर्तमान समय में जातीय भेदभाव बाहरी रूप से न होकर आन्तरिक रूप में आज भी विद्यमान है। आरक्षण की व्यवस्था के कारण आरक्षित वर्ग के व्यक्तियों एवं गैर-आरक्षित वर्ग के व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के मतभेद पाए जाते हैं। आरक्षित वर्ग के व्यक्तियों के अनुसार वर्तमान समय में भी उन्हें आरक्षण की आवश्यकता है, क्योंकि आज भी निम्न जाति के व्यक्ति पिछड़े हुए हैं, जबकि गैर-आरक्षित वर्ग के व्यक्तियों का मानना है, कि इस तरह से दिया जाने वाला आरक्षण उनके साथ अन्याय है। भारत में जातीय असमानताओं के बढ़ने का मुख्य कारण धर्म पर आधारित शिक्षा व्यवस्था भी रही है। प्राचीन काल में शिक्षा केवल उच्च जाति एवं संभ्भ्रान्त वर्ग के व्यक्तियों तक ही सीमित थी। शिक्षा से वंचित रहने के कारण निम्न जाति वर्ग के व्यक्ति मूलभूत सुविधाओं के

अभाव एवं सम्मानपूर्वक जीवन जीने में पिछड़े रहे। इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था विद्यमान हो गई, कि इन जातिगत असमानताओं को समाज द्वारा स्वीकार कर लिया गया और सामान्य रूप से देखा जाने लगा। भारतीय संविधान ने निम्न जाति वर्ग एवं वंचित वर्गों को सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करने एवं समाज में समानता के सभी अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

स्वतंत्र भारत के 74 साल के इतिहास में आरक्षण से अधिक किसी अन्य मुद्दे ने देश की दशा को प्रभावित नहीं किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारा देश ऊँच-नीच, जाति-पाति, छूआछूत आदि कुरीतियों से ग्रस्त था। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए संविधान के अनुच्छेद 15(4) में राज्य को सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गो व अनुसूचित जातियों व जनजातियों के उत्थान के लिए विशेष प्रावधान किए गए और यहीं से आरक्षण व्यवस्था का सूत्रपात हुआ। बाद के वर्षो में सरकारी नौकरियों व शिक्षण संस्थानों में प्रवेश में अनुसूचित जातियों के लिए 15% तथा अनुसूचित जनजातियों के लिए 7.5% स्थान आरक्षित करने का प्रावधान किया गया। 1990 में मण्डल आयोग की अनुशंसाओं को लागू किये जाने के पश्चात अन्य पिछड़े वर्ग को भी नौकरी व सरकारी शिक्षण संस्थानों में प्रवेश में 27% आरक्षण दिया गया। भारत सरकार ने रोजगार के लिए आरक्षण व्यवस्था को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया है, जैसे- अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण 27%, अनुसूचित जाति के लिए आरक्षण 21%, अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण 02%, आर्थिक रूप से कमजोर सवर्णों को आरक्षण 10%।

भारत में आरक्षण की व्यवस्था लागू करने का प्रमुख उद्देश्य सदियों से शोषित सामाजिक वर्गों को विकास की मुख्यधारा में सम्मिलित करना था। उन्हें गैर-आरक्षित वर्ग की तुलना में अतिरिक्त अवसर तथा वरीयता प्रदान कर सामाजिक समानता का वातावरण तैयार करना था। इसके पीछे मूल विचार समाज में समानता सुनिश्चित करने से पहले न्याय की स्थापना करना था, क्योंकि वर्षों से हाशिये पर वंचित वर्गों को समाज की मुख्यधारा में लाए बिना उन्नत राष्ट्र की कल्पना करना आधारहीन हैं। आरक्षण लागू होने के बाद के समय में यह देखा गया, कि समाज का एक बड़ा वर्ग आरक्षण की सुविधा होने के बाद भी इसका लाभ उठाकर

अपनी उन्नति सुनिश्चित करने से वंचित रह गया है। जातिगत भेदभाव को मिटाने के उद्देश्य से लाई गई, आरक्षण व्यवस्था ने एक नए ढंग से जातिवाद को और सशक्त बना दिया है, जिससे कि आरक्षण की मूल भावना पर ही सवाल उठते हैं। आरक्षण के कारण देश आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्गों में विभाजित हो गया है, जिसके कारण समय-समय पर सामाजिक एकता पर भी संकट उत्पन्न होता रहता है।

वर्तमान समय में यह आवश्यक है, कि भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति इन सभी मतभेदों को समाप्त कर राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकें। भारतीय समाज की संरचनात्मक समस्याओं का गहन अध्ययन कर इनमें सुधार की आवश्यकता है, जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षा निभा सकती है। 'शिक्षा' रूपी रत्न समाज का पिछड़ापन दूर कर एवं सामाजिक जागरूकता बढ़ाकर सामाजिक उन्नति का आधार तैयार कर सकता है। भारतीय सन्दर्भ में शिक्षकों को समाज में प्रतिष्ठित स्थान दिया गया है, क्योंकि शिक्षक शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक-परम्पराओं एवं आदर्शों का मान रखते हैं, तथा समाज के सभी व्यक्तियों को सही राह और सही मार्ग दिखाते हैं। शिक्षक की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण इसलिए माना गया है, क्योंकि किसी भी शिक्षा पद्धति का केन्द्र-बिन्दु शिक्षक ही है। शिक्षक ही अपने विद्यार्थियों को ज्ञान व मार्गदर्शन प्रदान कर राष्ट्र के विकास में योगदान देने योग्य बनाते हैं। डॉ० राधाकृष्णन (1960) के अनुसार- "समाज में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है। वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं और तकनीकी कौशल के संचरण के लिए धुरी के रूप में कार्य करता है, और सभ्यता के दीपक को जलाने में मदद करता है।" कोठारी आयोग (1964-66) के शब्दों में- "सभी विभिन्न कारक जो शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को प्रभावित करते हैं, शिक्षकों की गुणवत्ता, क्षमता और चरित्र निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण हैं।" शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति तभी सम्भव है, जब शिक्षक सामाजिक व्यवस्था की संरचना को स्पष्ट रूप से जान कर अपने छात्रों को सकारात्मक एवं भेदभाव रहित अधिगम वातावरण प्रदान कर सकें।

1.1 कार्य-सन्तुष्टि

कार्यसन्तुष्टि दो शब्दों से मिलकर बना है- कार्य एवं सन्तुष्टि। इस प्रकार कार्य सन्तुष्टि का शाब्दिक अर्थ है- अपने व्यवसाय या कार्य से प्राप्त होने वाला सन्तोष। स्मिथ (1955) के अनुसार- "कार्य से सन्तुष्टि कर्मचारी का निर्णय है, कि उसकी नौकरी पूरी तरह से उसकी विभिन्न जरूरतों को पूरा कर रही है, कि नहीं।" बुलॉक (1962) के शब्दों में- "कार्य संतुष्टि एक अभिवृत्ति है, जो बहुत सी चाही और अनचाही अनुभवों के परिणाम है, जिसमें व्यक्ति के अपने कार्य के प्रति जुड़ाव को परिलक्षित करता है।" माइकल ई0 ब्राउन (1965) ने कहा है, कि- "कार्य संतुष्टि व्यक्ति के अपने कार्य स्थिति के पक्षगत अनुभव या मनोवैज्ञानिक परिस्थिति से है।"

शिक्षक-प्रशिक्षकों को अपने व्यवसाय के किन-किन पक्षों से सन्तुष्टि प्राप्त होती है, यह मनोवैज्ञानिक विषय है। शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए कार्य की उत्तम दशाएँ, सामाजिक सम्मान, प्रतिष्ठा, अच्छा वेतन एवं मनोवांछित आदि के स्थान पर नियुक्ति होने के परिणामस्वरूप भी उसे वह सन्तोष प्राप्त नहीं होता है, जो किसी समान योग्यता रखने वाले किसी दूसरे शिक्षक-प्रशिक्षकों को कम सुविधाएँ एवं कम वेतन में भी सन्तुष्टि प्राप्त हो जाती हैं। इसका आशय यह है, कि कार्य-सन्तुष्टि एक आन्तरिक भाव है, न कि बाह्य अर्थात् कार्य-सन्तुष्टि का सम्बन्ध मनुष्य के हृदय से होता है।

हैरल (1976) ने कार्य-सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों को तीन वर्गों में विभाजित किया है- वैयक्तिक, व्यावसायिक एवं प्रबन्धन कारक। वैयक्तिक कारक के अन्तर्गत आयु, पारिवारिक स्थिति, शिक्षा एवं आकांक्षा-स्तर आदि आते हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से कार्य-सन्तुष्टि को प्रभावित करते हैं। अपेक्षित कौशल, व्यावसायिक एवं भौगोलिक स्थिति आदि व्यावसायिक कारक हैं। प्रबन्धन कारकों में कर्मचारियों के वेतन, कार्य से सम्बन्धित सुरक्षा, पदोन्नति के अवसर, पर्यवेक्षण आदि सम्मिलित होते हैं, जो उनके व्यवसाय एवं कार्य से प्राप्त सन्तोष में वृद्धि करने में सहायक होते हैं।

1.2 व्यावसायिक-प्रतिबद्धता

व्यवसाय जीवकोपार्जन का एक माध्यम है। शिक्षण न केवल एक व्यवसाय है, बल्कि यह सभी व्यवसायों की जननी भी है। इस दृष्टि से शिक्षण व्यवसाय सभी व्यवसायों में श्रेष्ठ माना जाता है। व्यवसाय के प्रति समर्पण की भावना एवं अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को व्यवसाय में समर्पित कर देने की तत्परता ही व्यावसायिक-प्रतिबद्धता कहलाती है। यह एक अवधारणा है, जिससे किसी व्यवसाय से सम्बन्धित उत्तरदायित्व ग्रहण करने की स्वीकृति, दृढ़ इच्छाशक्ति, समयबद्धता, नियमितता एवं कर्तव्यनिष्ठता की भावना समाहित होती है। सभी व्यवसायों में शिक्षण एक ऐसा व्यवसाय है, जो समाज में सर्वाधिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। शिक्षण न केवल एक व्यवसाय है, बल्कि सभी व्यवसायों की जननी भी है। इसी दृष्टि से शिक्षण व्यवसाय उत्तरदायित्वों से पूर्ण व्यवसाय है। अतः मानवीय कार्यों में शिक्षण एक श्रेष्ठ एवं पवित्र कार्य है। शिक्षण कार्य को करने वाले शिक्षक एवं इससे सम्बन्धित अध्यापक शिक्षक का महत्व और भी अधिक है, क्योंकि शिक्षकों का राष्ट्र निर्माण एवं समाज सुधार में प्रभावी योगदान होता है।

अदावल एवं अन्य (1984) के अनुसार- "व्यावसायिक और कार्य की गुणवत्ता किसी शिक्षक-प्रशिक्षक की उस संगठन के प्रति प्रतिबद्धता के सूचक हैं, जहाँ वे अध्यापन कार्य करते हैं। अतः यदि कोई शिक्षक-प्रशिक्षक व्यावसायिक रूप से अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखें, तो वह सम्बन्धित संगठन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्य करने को अग्रसर रहेगा। शिक्षक की योग्यताओं में कार्यकुशलता के साथ-साथ शिक्षण के प्रति उसकी प्रतिबद्धता भी अति आवश्यक है, क्योंकि शिक्षक शिक्षण के प्रति जितने कर्तव्यबद्ध होंगे उतने ही अधिक योग्य-छात्र समाज को प्राप्त होंगे।" जाफरे एवं हॉगे (2001) के शब्दों में- "वह व्यक्ति जो अपने शिक्षण कार्य को उन्नत बनाना चाहता है, और विद्यालयी समय के बाद भी अतिरिक्त समय देने को तत्पर है, व्यावसायिक रूप से प्रतिबद्ध कहा जाएगा।" चोई एवं टैंग (2009) के कथनानुसार- "शिक्षक-प्रशिक्षकों की प्रतिबद्धता से तात्पर्य शिक्षण प्रशिक्षण व्यवसाय के साथ उनके मनोवैज्ञानिक जुड़ाव से होता है।" चट्टोपाध्याय समिति (1983-85) ने

ऐसे शिक्षकों की कल्पना की, जिनमें राष्ट्रीय अखण्डता एवं एकता की भावना हो, वैज्ञानिक दृष्टिकोण हो, जो शिक्षण कार्य में उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध हों एवं समाज व राष्ट्र के विकास के लिए सदैव चिंतित रहें।

शिक्षक-प्रशिक्षकों का कार्य केवल कक्षा अथवा विद्यालय तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि उन्हें छात्रों के परिजनों एवं समाज के अन्य सदस्यों के साथ सम्पर्क एवं संवाद भी बनाए रखना होता है। अतः शिक्षक-प्रशिक्षकों का उचित रूप से प्रशिक्षित होना आवश्यक है, ताकि वे शिक्षक-प्रशिक्षक के उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ-साथ समाज में सकारात्मक वातावरण बनाने में भी सहायक हो सकता है। यदि शिक्षक-प्रशिक्षकों में विद्यार्थियों, व्यवसाय, उत्कृष्टता प्राप्ति एवं नैतिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता पायी जाती है, तो उत्कृष्ट छात्र, नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण वातावरण एवं विकसित समाज का निर्माण स्वयं कर सकेंगे।

1.3 शिक्षक-प्रभावशीलता

शिक्षक-प्रभावशीलता की अवधारणा का सम्बन्ध शिक्षक के शिक्षण की प्रभावशीलता से है, अर्थात एक शिक्षक अपने अध्यापन कार्य से अपने शिक्षार्थियों को किस प्रकार सन्तुष्ट रखता है, वह स्तर शिक्षक की प्रभावशीलता का घोतक है। किसी भी शिक्षक की प्रभावशीलता का मापन उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त संतुष्टि स्तर एवं शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर से होता है। इस प्रकार शिक्षक-प्रभावशीलता का सम्बन्ध उसकी शिक्षण निष्पादन क्षमता से है, जिसे वह अपने शिक्षण कौशलों व ज्ञान के माध्यम से शिष्यों को पढ़ाते हुए अर्जित करते हैं। अमेरिकन रिसर्च एसोसिएशन (1952-53) के अनुसार- "शिक्षक प्रभावशीलता को शिक्षण के आधारभूत शिक्षण कौशल, समक्ष, कार्य, आदतें, वांछनीय अभिवृत्ति, मूल्य, निर्णय एवं छात्रों के व्यक्तिगत समायोजन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।" रॉयन (1969) के द्वारा- "उस अध्यापक को प्रभावशाली माना जाता है, जो छात्रों के मूल कौशलों, अभिवृत्ति, मूल्य एवं उचित कार्य की आदतों को समझते हैं।" एन0 ए0 फ्लैण्डर्स और साइमन (1969) के शब्दों में- "अध्यापक-प्रभावशीलता की विशेषताएँ, शिक्षण कार्यों और अध्यापन के परिणाम से सम्बन्धित हैं।" दास (1988) के कथनानुसार- "शिक्षक प्रभाविता का अर्थ- शिक्षा की पूर्णता

अर्थात् कार्यकुशलता एवं उत्पादकता के इष्टतम् स्तर से है। शिक्षक-प्रभावशीलता की पहचान शिक्षक के शिक्षण कार्य, व्यवहार एवं शिक्षक-छात्र सम्बन्ध कितने अच्छे हैं, से की जाती है।"

शिक्षक-प्रभावशीलता, अध्यापक के शिक्षण कौशलों व अध्यापन क्षमता के साथ-साथ उसकी उपलब्धियों के स्तर के अलावा शिक्षार्थियों का ज्ञान, उनकी रूचि व योग्यताओं के स्तर का भी फलन होता है। शिक्षक-प्रशिक्षकों में अपनी भूमिका के प्रभावशाली निर्वहन के लिए उन सभी विशेषताओं का होना आवश्यक है, जो उन्हें प्रशिक्षु, शिक्षक-प्रशिक्षकों की आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम बनाए। इससे स्पष्ट है, कि शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षण कार्य के प्रभावी होने से उत्तम शिक्षक तैयार किए जा सकते हैं। शिक्षकों की प्रभावशीलता, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं कार्य-सन्तुष्टि किसी भी देश की शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए अति आवश्यक होती है। शिक्षक-प्रभावशीलता के मनोवैज्ञानिक पक्षों को पाँच वर्गों में विभाजित किया है- दिशापरक पक्ष, प्रेरणापरक पक्ष, मनोवृत्ति विकास पक्ष, प्रविधि पक्ष एवं वैयक्तिक पक्ष। दिशापरक पक्ष के अन्तर्गत शिक्षा, विद्यार्थियों के लिए एक वैज्ञानिक एवं अनुकूलित दिशा का निर्धारण करती है, ताकि उनकी शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक क्षमताओं का विकास पूर्ण रूप से हो सके। प्रेरणापरक पक्ष के अन्तर्गत सीखने पर प्रेरणा का गहरा प्रभाव पड़ता है। जिस विषय की ओर विद्यार्थी अधिक प्रेरित होते हैं, उस विषय को आसानी से सीख लेते हैं। मनोवृत्ति विकास पक्ष के अन्तर्गत ऐसे नागरिक तैयार करने की बात कही गयी है, जो अपने अधिकारों के साथ-साथ दूसरों के अधिकारों को भी समझ सकें और व्यक्तिगत कल्याण के साथ-साथ सामूहिक कल्याण के लिए भी सक्रिय हो सकें। प्रविधि पक्ष के अन्तर्गत शिक्षक को इस बात की जानकारी होनी चाहिए, कि किसी विषय का प्रस्तुतीकरण कब और कैसे किया जाए। वैयक्तिक पक्ष से तात्पर्य बुद्धि निरीक्षण क्षमता तथा सामाजिक सामर्थ्य से है। शिक्षक को प्रखर बुद्धि का होना चाहिए जिससे वह अपने विद्यार्थियों को समझ सकें तदनुसार शैक्षणिक व्यवस्था का परामर्श दे सकें।

शिक्षक की प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं- प्रवीणता, सामर्थ्य, स्वभाव एवं चरित्र, अभिरूचि तथा रूझान, संवेगों पर नियंत्रण, निष्पक्ष व्यवहार, शारीरिक बनावट और स्वास्थ्य, मानव

विकास की समझ, सीखने के सिद्धांतो का ज्ञान, शैक्षिक उद्देश्यों का ज्ञान एवं शैक्षिक अनुसंधानों का ज्ञान आदि प्रभावित करते हैं। प्रवीणता अध्यापक को अध्यापन कार्य में सफल बनाने के लिए एक आवश्यक शर्त होती है, जैसे-एक गणित के शिक्षक के लिए यह जरूरी है, कि वह गणित में दक्ष हो, तभी वह बालकों को गणित की शिक्षा सही अर्थ में दे सकेगा। स्वभाव एवं चरित्र के अन्तर्गत शिक्षक के लिए अनुकूल स्वभाव तथा चरित्र भी आवश्यक शील गुण होता है, क्यौंकि विद्यार्थियों के समस्त व्यक्तित्व पर शिक्षक का व्यवहार एवं आचरण का प्रभाव पड़ता है। संवेगों पर नियंत्रण के अन्तर्गत अध्यापन के लिए यह भी जरूरी है, कि वह अपने क्रोध, घृणा एवं भय आदि के संवेगों पर काबू रखे। निष्पक्ष व्यवहार के अन्तर्गत शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों, सहकर्मियो, निरीक्षकों तथा विद्यालय से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों के साथ निष्पक्ष रहना चाहिये। यही एक सच्चे शिक्षक का उत्तरदायित्व होता है। सीखने के सिद्धांतों के ज्ञान के अन्तर्गत शिक्षक को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि किन-किन परिस्थितियों में सीखना सहज एवं प्रभावशाली होता है, विद्यार्थियों को सिखाने के चार पक्ष- कब, क्या, कहाँ, और कैसे, से शिक्षक को अवगत होना बहुत जरूरी है। शिक्षा एक विकासात्मक प्रक्रिया है और प्रतिदिन नयी-नयी खोजें एवं शिक्षा विधि में परिवर्तन होते रहते हैं, इसलिए अध्यापकों को वर्तमान समय की माँग को देखते हुये हमेशा जागरूक एवं प्रयासरत रहना चाहिये।

2.0 समस्या का प्रादुर्भाव

लॉक के अनुसार शिक्षक-प्रशिक्षकों का कार्य केवल प्रशिक्षु-शिक्षकों को प्रशिक्षण ही प्रदान करना नहीं है, बल्कि प्रशिक्षु-शिक्षकों के समन्वय हेतु प्रभावी एवं गुणात्मक सुधारों के लिए भी प्रयास करना है। शिक्षक प्रशिक्षक भावी शिक्षकों को प्रशिक्षित करने हेतु जितना प्रभावशाली अध्ययन एवं प्रशिक्षण देगें उतने ही अधिक आदर्श शिक्षक राष्ट्र को प्राप्त होगें। इस कार्य हेतु यह महत्वपूर्ण हो जाता है, कि शिक्षक-प्रशिक्षक सकारात्मक होकर अपने कार्य करें। तभी उन्हें अपने कार्य से संतुष्टि प्राप्त हो सकेगी। कार्य संतुष्टि किसी भी व्यवसाय एवं व्यक्ति की सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण विषय है। शिक्षक-प्रशिक्षक, प्रभावी शिक्षण-प्रशिक्षण एवं अधिगत प्रक्रिया का संचालन ही नहीं करता बल्कि प्रशिक्षु, शिक्षक-प्रशिक्षकों के समउन्नयन हेतु प्रभावी और गुणात्मक

सुधारों के लिए भी प्रयास करता है। लॉक के अनुसार- पौधों का विकास माली द्वारा होता है, तथा मानव का विकास शिक्षा द्वारा एवं प्रशिक्षु-शिक्षकों का विकास शिक्षक-प्रशिक्षकों के द्वारा होता है।

बदवार, एम. (2014), चौहान, एम. (2012) के शोध यह प्रदर्शित करते है, कि शिक्षक-प्रशिक्षक उपर्युक्त गुण, क्षमता, समर्पण के बाद भी अपने कर्तव्यों का सही निष्पादन नहीं कर पाते हैं, जबकि उनकी योग्यता समान हैं। इसके लिए शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक-प्रतिबद्धता के साथ-साथ शैक्षिक संस्थाओं की संरचना एवं संगठनात्मक वातावरण सहित आदि अनेक कारक उत्तरदायी हो सकते हैं। रामा (2000), पांडा (2001) एवं नेमा (2004), ने कार्य संतुष्टि के सन्दर्भ में अध्ययन किया है, कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर अन्य विद्यालयी कारकों का प्रभाव पड़ता है। इस सन्दर्भ में शिक्षक-प्रशिक्षकों की अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता जितनी अधिक होती है, वे उतने ही अधिक प्रभावी एवं नवीनतम तरीकों से शिक्षण कार्य करने हेतु प्रयासरत रहते हैं और उनके द्वारा सदैव अपने विद्यार्थियों का प्रभावशाली अध्ययन कराने हेतु प्रेरित किया जाता है, जिस कारण वे अपने शिक्षकों को प्रभावशाली बनाने एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए भी प्रतिबद्ध होते हैं। भारतीय सन्दर्भ में आरक्षण एक ऐसा गम्भीर विषय है, जिसने भारतीय समाज को दो मुख्य वर्गों (आरक्षित एवं गैर-आरक्षित) में विभाजित कर दिया है। इन दोनों ही वर्गों से सम्बन्धित व्यक्तियों में शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों की असमानताओं को लेकर मतभेद पाये जाते हैं। वर्तमान सन्दर्भ में ये अध्ययन करने की आवश्यकता है, कि इन दोनों वर्गों से सम्बन्धित शिक्षक-प्रशिक्षकों में उनकी कार्य-संतुष्टि, उनकी व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता का अध्ययन किया जाये।

इसी सन्दर्भ में निम्न शोध प्रश्नों के उत्तर खोजने की आवश्यकता है, ताकि आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकों में कार्य-संतुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता के सन्दर्भ में किसी भी प्रकार की समानता अथवा असमानता के विषय में स्पष्ट जानकारी प्राप्त हो सके।

1. क्या आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि में कोई अन्तर होता है?

2. क्या आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति समान रूप से प्रतिबद्ध हैं?

3. क्या आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता समान होती है?

4. क्या आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि उनकी व्यावसायिक-प्रतिबद्धता से सम्बन्धित है?

5. क्या आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता के मध्य कोई संबंध होता है अथवा नहीं?

6. क्या आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता उनकी कार्य-सन्तुष्टि से सम्बन्धित है?

उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर खोजने हेतु शोधार्थिनी ने वर्तमान समस्या का चयन किया है, जिसका शीर्षक- "शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन है।"

3.0 समस्या का औचित्य

शिक्षक-प्रशिक्षण प्रक्रिया किसी भी सभ्य समाज के निर्माण का महत्वपूर्ण अवयव है, जिसके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में यह प्रक्रिया समय और देश काल के अनुसार परिवर्तनशील रही है, जिसके मुख्य कारण में भारतीय सामाजिक संरचना को देखा जा सकता है। प्राचीन-काल से ही शिक्षा के आदान-प्रदान के स्वरूप सामाजिक-परिवर्तन के साथ बदलते रहें हैं, जिसमें समाज की वर्गीय व्यवस्था महत्वपूर्ण कारक रही है, जैसे- ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य वर्गों तक ही सीमित थी लेकिन जैसे-जैसे समाज के स्वरूप में परिवर्तन हुआ, तो शिक्षा का सार्वभौमिकरण सम्भव हुआ। देश की स्वतंत्रता के बाद भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संस्थाओं में परिवर्तन हुए, जिसके परिणामस्वरूप सम्पन्न-विपन्न वर्गों का विभाजन हुआ। ऐसी स्थिति में भारतीय संविधान और विभिन्न कानूनों के द्वारा विपन्न वर्ग को आरक्षित वर्ग में स्थान दिया गया, ताकि एक समान समाज की स्थापना की जा सके। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संविधान के लागू होने तथा उसके प्रभावों के आधार पर आरक्षित और गैर-आरक्षित वर्ग के बारे में विभिन्न शोध

अध्ययन की आवश्यकता है ताकि रूढ़िवादी समाज, जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि अर्थहीन विचारधाराओं का खण्डन किया जा सके।

शोधार्थिनी ने इस समस्या को लेने से पूर्व विभिन्न शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण किया है, इन शोध अध्ययनों का विवरण निम्नलिखित है-

तलिका-1 शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण

क्रम सं.	शोधार्थी	वर्ष	अनुसंधान क्षेत्र	परिणाम
1	मांगिक, आर0,0 सूमरो, एच0जे0 व घूमरोए ई0ए0	2011	विश्वविद्यालय में गैर पीएचडी संकाय के बीच नौकरी की संतुष्टि का अध्ययन।	विश्वविद्यालयों के गैर-पीएचडी संकाय के सदस्यों के बीच नौकरी की संतुष्टि कम है।
2	पचौरी, डी0	2014	मैनपुरी जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण-प्रभावशीलता का अध्ययन।	राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता उच्च पायी गयी, जबकि वित्तहीन विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता सबसे निम्न पायी गयी है।
3	वर्मा, एन0के0	2015	कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्त एवं अनुदान प्राप्त शिक्षक-शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन।	स्ववित्तपोषित बी.एड. महाविद्यालयों में कार्यरत बी.एड. शिक्षकों की तुलना में अनुदानित बी.एड. महाविद्यालयों के बी.एड. शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि अधिक है।
4	गुप्ता, एम0 और सिंह, वी0	2015	व्यावसायिक जवाबदेही के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव का अध्ययन।	महिला शिक्षकों की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों में व्यावसायिक जवादेही व व्यावसायिक दबाव अधिक है।
5	जैसवाल, बी0एस0	2017	व्यावसायिक-प्रतिबद्धता और शिक्षक।	व्यावसायिक-प्रतिबद्धता और शिक्षकों के बीच सकारात्मक सम्बन्ध है। यदि व्यावसायिक-प्रतिबद्धता उच्च होगी तो शिक्षण भी उच्च होगा।
6	कुमार, एम0	2017	माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों पर व्यावसायिक-प्रतिबद्धता का अध्ययन।	माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक-प्रतिबद्धता, महिला शिक्षकों से अधिक है।
7	शांति	2017	शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-संतुष्टि का उनकी कार्य क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।	कार्य-संतुष्टि के प्रत्येक आयाम से ग्रामीण व शहरी शिक्षक-प्रशिक्षक संतुष्ट पाए गए तथा उनकी कार्य-संतुष्टि समान पाई गयी है।

8	यादव, डी0के0	2018	सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शिक्षकों की शिक्षण-प्रभावशीलता तथा जीवन-संतुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन।	सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शिक्षकों की शिक्षण-प्रभावशीलता तथा जीवन-संतुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।
9	विश्वकर्मा, आर0	2018	गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।	बी.टी.सी एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों के समूह के बीच अध्यापक कार्य संतुष्टि के स्तर पर अंतर है।
10	यादव, एस0एल0	2019	ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों की शिक्षण-प्रभावशीलता का अध्ययन	माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों में शिक्षण-प्रभावशीलता के आधार पर सार्थक अंतर है।
11	कुमार, वी0	2020	प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् टी.ई.टी. उत्तीर्ण एवं गैर-टी.ई.टी. शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन।	टी.ई.टी. उत्तीर्ण शिक्षकों की प्रभावशीलता गैर-शिक्षकों की तुलना में अधिक है।

पचौरी, डी0 (2014) के शोध के अनुसार- राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता उच्च पायी गयी, जबकि वित्तहीन विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता निम्न पायी गयी है। वर्मा, एन0 के0 (2015) ने अपने शोध में कहा है- स्ववित्तपोषित बी.एड. महाविद्यालयों में कार्यरत् बी.एड. शिक्षकों की तुलना में अनुदानित बी.एड. महाविद्यालयों के बी.एड. शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि अधिक है। कुमार, एम0 (2017) के शोध निष्कर्षों से प्राप्त हुआ है कि 1. माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक-प्रतिबद्धता महिला शिक्षकों से अधिक है। 2. मध्यमानों की दृष्टि से सामान्य वर्ग की व्यावसायिक-प्रतिबद्धता अधिक धनात्मक पायी गयी है, आरक्षित वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा। शांति, (2017) के शोध के अनुसार- संतुष्टि के प्रत्येक आयाम से ग्रामीण व शहरी शिक्षक-प्रशिक्षक संतुष्ट पाए गए तथा उनकी कार्य संतुष्टि समान पाई गयी है। यादव, डी0 के0 (2018) ने अपने शोध में कहा है- सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शिक्षकों की शिक्षण-प्रभावशीलता तथा जीवन-संतुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।

उपर्युक्त शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण करने से निष्कर्ष निकलता है कि कार्य-संतुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता का अलग-अलग परिस्थितियों में अध्ययन किया गया है। भारतीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों के संदर्भ में कार्य-संतुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता का अध्ययन करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। आरक्षण सम्बन्धी विचार यदि किसी भी प्रकार से शिक्षक-प्रशिक्षकों के कार्य संतुष्टि, व्यवसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता को प्रभावित करते हों तो इस संबंध में स्पष्ट सूचना प्राप्त हो सकेगी। अतः वर्तमान संदर्भ में उपर्युक्त शोध अध्ययन किया जाना प्रासंगिक है।

4.0 समस्या-कथन

"शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन"

5.0 शोध समस्या-कथन में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या-

5.1 शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान-

शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान से अभिप्राय उन संस्थाओं या महाविद्यालयों से है। जहाँ पर शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए कक्षाएँ संचालित होती हैं, और उन संस्थाओं को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा उन्हें शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए मान्यता दी गयी है, और वहाँ पर बी0एड0 कार्यक्रम प्रशिक्षण की व्यवस्था से है।

5.2 आरक्षित वर्ग

आरक्षित वर्ग से तात्पर्य, उस मानव समूह, मूल वंशों या उन जातियों से है, जिन्हें भारतीय संविधान की धारा-16, 341, 342 में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ी हुई जाति कहा गया है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में आरक्षित वर्ग के अन्तर्गत निम्न वर्ग आते हैं।

(अ) अनुसूचित जाति

(ब) अनुसूचित जनजाति

(स) पिछड़ी जाति

5.3 गैर-आरक्षित वर्ग

प्रस्तुत शोध-अध्ययन में गैर-आरक्षित वर्ग से आशय, उस वर्ग समूह से है, जिन्हें केन्द्र एवं राज्य सरकार ने शिक्षा एवं सेवा में आरक्षण की श्रेणी के अन्तर्गत नहीं रखा है। ब्राम्हण, क्षत्रिय एवं वैश्य तथा उसकी अन्य उपजातियाँ गैर-आरक्षित वर्ग के अन्तर्गत रखी गयी हैं।

5.4 शिक्षक-प्रशिक्षक

शिक्षक-प्रशिक्षक वे शिक्षक हैं, जो शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् हैं, एवं छात्रों को भावी शिक्षक बनाने हेतु शिक्षण कार्य करते हैं।

5.5 कार्य-सन्तुष्टि

लोकेश कौल (1969), के अनुसार- "किसी व्यक्ति की नौकरी, नौकरी की उपलब्धि एवं नौकरी के अनुभवों के मूल्यांकन के परिणामस्वरूप नौकरी की संतुष्टि एक सकारात्मक या सुखद प्रतिक्रिया है।" ﬩

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में कार्य-संतुष्टि से तात्पर्य अपने कार्य एवं व्यवसाय से प्राप्त संतुष्टि की भावना से है। यह संतुष्टि कार्य करने के दौरान प्रेरणा के रूप में कार्य करती है।

5.6 व्यावसायिक-प्रतिबद्धता

अमेरिकन विद्वान ओ0 रैली (1969), के अनुसार- "व्यावसायिक-प्रतिबद्धता किसी व्यक्ति का अपने वृत्ति संगठन के साथ मनोवैज्ञानिक बन्धन है, जिसमें अपने कार्य में तन्मयता और संगठन के मूल्यों में निष्ठा और विश्वास निहित है।"

कार्यात्मक परिभाषा

व्यावसायिक-प्रतिबद्धता सरल रूप में व्यवसाय के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना है, अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को व्यवसाय में समर्पित कर देने की तत्परता ही व्यावसायिक-प्रतिबद्धता कहलाती है।

5.7 शिक्षक-प्रभावशीलता

विडाल (1964), के अनुसार- "शिक्षक की एक या अधिक योग्यताएं जो बांछित शैक्षिक प्रभावों को उत्पन्न करती हैं, शिक्षक की क्षमता अर्थात प्रभावशीलता कहलाती है।"

कार्यात्मक परिभाषा

शिक्षक-प्रभावशीलता से तात्पर्य, शैक्षिक एवं व्यावसायिक ज्ञान, कक्षा-कक्ष प्रबन्धन, शिक्षण-कार्य में नवीनता, विद्यार्थियों व संस्थान के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति एवं शिक्षण-कार्य के प्रति उत्तरदायित्वों को निभाने से है।

6.0 शोध-अध्ययन के उद्देश्य

1. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक-प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि एवं व्यावसायिक-प्रतिबद्धता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

5. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

6. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता एवं कार्य-सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

7.0 शोध-अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

2. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक-प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

3. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि एवं व्यावसायिक-प्रतिबद्धता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

5. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

6. आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता एवं कार्य-सन्तुष्टि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

8.0 शोध-अध्ययन का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत शोध-अध्ययन में आगरा मण्डल में स्थित शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् शिक्षक-प्रशिक्षकों तक ही सीमित किया जायेगा।

2. प्रस्तुत शोध-अध्ययन में आगरा मण्डल में स्थित जी०एल०ए० (डीम्ड विश्वविद्यालय) मथुरा, डी०ई०आई० (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग आगरा एवं डॉ० बी० आर० अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा से सम्बद्ध शिक्षक-प्रशिक्षक संस्थानों में कार्यरत् शिक्षक-प्रशिक्षकों तक ही सीमित किया जायेगा।

3. प्रस्तुत शोध-अध्ययन में आरक्षित वर्ग के अन्तर्गत केवल तीन वर्गो (अनसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़े वर्ग) एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों तक ही सीमित किया जायेगा।

9.0 शोध-अध्ययन के चर

प्ररस्तुत शोध-अध्ययन में शोधार्थिनी ने वर्तमान समस्या का अध्ययन करने के लिए तीन चरों का चयन किया है, जो इस प्रकार हैं- कार्य-सन्तुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता।

10.0 न्यादर्श

न्यादर्श को प्रतिनिधि न्यादर्श कहा जाता है, वह जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत शोध-अध्ययन में न्यादर्श के रूप में शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् शिक्षक-प्रशिक्षकों पर वर्तमान अध्ययन किया जायेगा।

10.1 न्यादर्श चयन-विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आगरा मण्डल में स्थित संस्थानों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श चयन-विधि द्वारा किया जायेगा। उक्त संस्थानों में कार्यरत् शिक्षक-प्रशिक्षकों का न्यादर्श के रूप में चयन करने हेतु यादृच्छिक चयन-विधि का प्रयोग किया जायेगा। न्यादर्श के रूप में 200 शिक्षक-प्रशिक्षक आरक्षित वर्ग से एवं 200 शिक्षक-प्रशिक्षक गैर-आरक्षित वर्ग से सम्बन्धित होंगे। इस प्रकार कुल 400 शिक्षक-प्रशिक्षकों पर वर्तमान अध्ययन किया जायेगा।

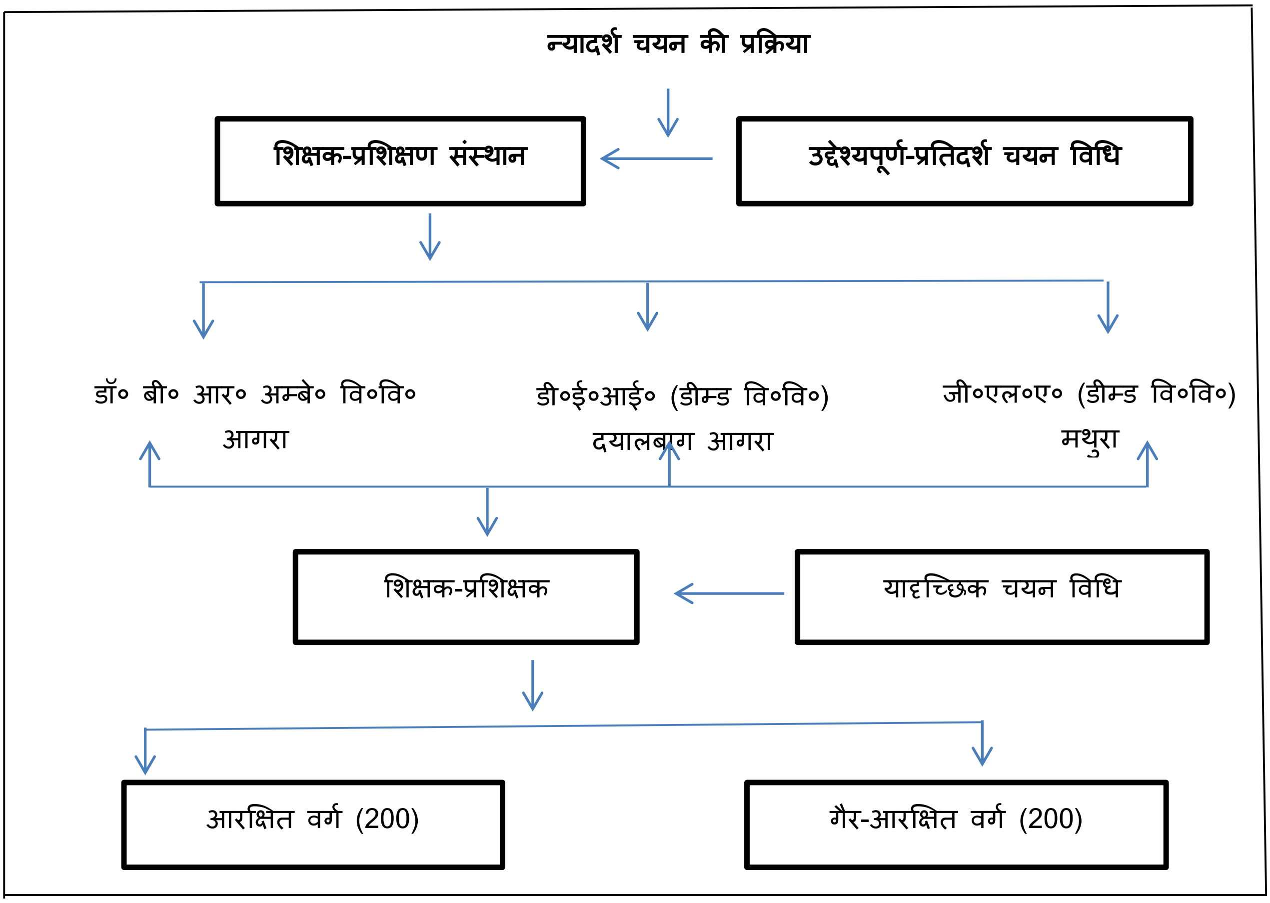

चित्र- 1 न्यादर्श चयन की प्रक्रिया

11.0 शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण-

प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता के मापने हेतु निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

1. कार्य-संतुष्टि के मापन हेतु नसरीन एवं ए० एन्नीस (2014) के द्वारा निर्मित उपकरण "**टीचर्स जॉब सेटिसफेक्शन क्वश्चनेयर**" का प्रयोग किया जायेगा।

2. व्यावसायिक-प्रतिबद्धता के मापन हेतु विशाल सूद (2011) के द्वारा निर्मित उपकरण "**प्रोफेशनल कमिटमेन्ट स्केल**" का प्रयोग किया जायेगा।

3. शिक्षक-प्रभावशीलता के मापन हेतु सपना शर्मा एवं सावित्री शर्मा (2021) के द्वारा निर्मित उपकरण "**टीचर्स इफैक्टिवनैस स्केल**" का प्रयोग किया जायेगा।

12.0 शोध अध्ययन विधि

आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता का अध्ययन करने के लिए वर्तमान शोध-अध्ययन में 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया जाएगा।

13.0 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों का विश्लेषण करने हेतु निम्नांकित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।

(क) मध्यमान (mean)

(ख) मानक विचलन (S.D.)

(ग) टी-परीक्षण (t-test)

(घ) प्रोडक्ट मोमेंट कॉरिलेशन

14.0 शोध-अध्ययन की उपयोगिता

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा समाज को सभ्य बनाने, समाज की बुराइयों को दूर करते हुए समाज में सकारात्मक विचारधारा का विकास किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही समाज एवं राष्ट्र का विकास सम्भव है, अतः शिक्षक की भूमिका सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए आवश्यक है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों की अधिगम व व्यवहार सम्बन्धी सभी आवश्यकताओं एवं कठिनाइयों को समझ कर उचित समाधान कर सकते हैं, तथा विद्यार्थियों को प्रभावपूर्ण तरीके से अधिगम करने और भविष्य में सफलता प्राप्त करने में सहायक होते हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षक को ईश्वर से भी उच्च स्थान दिया गया है, जिसे कबीरदास जी के दोहे से समझा जा सकता है-

गुरू गोविन्द दोउ खडे, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविन्द दियो बताय।।

शिक्षक वही है, जो विद्यार्थियों को उचित निर्देश देकर उसे राष्ट्र की नींव को मजबूत करने योग्य बनाता है। भारत विभिन्नता में एकता को दर्शाने वाला एक ऐसा देश है, कि सांस्कृतिक, भौगोलिक, भाषायी, धार्मिक एवं जातिगत आदि विविधताएँ होते भी सभी व्यक्ति मिल-जुलकर रहते हैं, यद्यपि कभी-कभी सामाजिक तनाव एवं संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न होती है, जिसका कारण यही विविधताएँ होती हैं। प्राचीन समय में धार्मिक एवं जातिगत विविधताओं के कारण भारतीय समाज में भेदभाव की स्थिति प्रचलित थी। शिक्षा के कारण ही वर्तमान समय तक आते-आते यह भेदभाव काफी कम हो चुका है। आरक्षण की प्रक्रिया ने इस भेदभाव को कम करने एवं सभी जाति व धर्म के व्यक्तियों को समान स्तर पर लाने में काफी सहायता की है।

भारतीय संविधान में पिछडी एवं नीची जातियों को आरक्षण प्रदान कर उन्हें समाज में उच्च जातियों के व्यक्तियों के समान शिक्षा प्राप्त करने, जीविकोपार्जन करने एवं जीवन व्यतीत करने में सहायता की है, इसी कारण वर्तमान में दो वर्ग हैं- आरक्षित वर्ग एवं गैर-आरक्षित वर्ग। आरक्षित वर्ग के व्यक्ति वह हैं, जो नीची व वंचित जातियों से सम्बन्धित हैं एवं संविधान में उन्हें कुछ विशेष सुविधाएँ दी गयी हैं, गैर-आरक्षित वर्ग के वह

व्यक्ति हैं जो उच्च जातियों से सम्बन्धित हैं, और सदैव से ही समाज में प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त करते आ रहे हैं। इन दोनों ही वर्गों के व्यक्तियों में आरक्षण को लेकर अपने-अपने विचार हैं, जो एक-दूसरे के विरुद्ध होते हैं। शैक्षिक परिवेश में शिक्षक भी इन्ही वर्गों से आते हैं, अतः शिक्षकों में भी अपने व्यवसाय में आने की संतुष्टि एवं असंतुष्टि हो सकती है। शिक्षक-प्रशिक्षक वे होते हैं, जो भावी शिक्षक तैयार करते हैं। वे छात्रों को शिक्षण-कौशलों का ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें श्रेष्ठ शिक्षक बनने के सभी गुण सिखाते हैं। अतः शिक्षक-प्रशिक्षक की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो जाती है। मुख्य रूप से यह आवश्यक है, कि शिक्षक-प्रशिक्षक अपने कार्य से सन्तुष्ट रहें, अपने व्यवसाय के प्रति पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध हों एवं शिक्षण प्रक्रिया हेतु अपने सभी उत्तरदायित्व उचित प्रकार से निभायें। पदोन्नति की प्रक्रिया को लेकर आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों में अपने व्यवसाय से प्राप्त कार्य-सन्तुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किये जाने से वर्तमान परिस्थितियाँ स्पष्ट हो सकेंगी।

प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह भी स्पष्ट हो सकेगा, कि आरक्षण शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि उनकी व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता एवं उनकी शिक्षक-प्रभावशीलता को प्रभावित करता है, अथवा नहीं। तत्पश्चात् उपर्युक्त सुझाव दिये जा सकेंगे ताकि शिक्षक-प्रशिक्षक अपने कार्य से सन्तुष्टि प्राप्त कर सकें, अपने कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं प्रतिबद्धता बनाये रखें। शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षण-कौशलों को प्रभावशाली बनाने हेतु नवीन सुझाव दिये जा सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल एस. एवं अग्रवाल, एन. (2004). विद्याभारती द्वारा संचालित कानपुर नगर के सरस्वती विद्या मन्दिरों के शिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि का अध्ययन, एस.एस. श्रीवास्तव (सम्पादक), भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊ: इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, 23(1)

एकलॉग, एस. बी. (2005). टीचर जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड डिससेटिसफेक्शनः एन इम्पाइरीकल ऑफ अर्बन टीचर इन इथोपिया, डिजर्टेशन इण्टरनेशनल, 66 (5) पेज-1565.

अग्रवाल, एस. एवं जायसवाल, आर. (2007). सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन, एस. एस. श्रीवास्वत (सम्पादक), भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊः इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, 26(1), पृ0 43-48.

अग्रवाल, एस. (2009). विभिन्न प्रबन्ध तन्त्रों द्वारा संचालित उत्तर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण, शिक्षक व्यवहार, शिक्षक प्रभावशीलता, कृत्य सन्तोष एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, प्रकाशित शोध प्रबन्ध (शिक्षा), संदर्भित डी.ई. आई. आगरा।

अम्बेडकर, डॉ बी. आर. (1951). जाति विच्छेद, प्रथम प्रकाशित नई दिल्ली, कर्नाटक सरकार अमृत बुक कम्पनी।

बद्री, एन. (1994). जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ स्कूल हेड्स इन चेन्गालपट्टू एजुकेशनल डिस्ट्रिक्ट, डी. राजा गणेश (एड.), ऐक्सपेरीमेन्ट्स इन एजुकेशन, चेन्नई: थीरू पी.सी. वैद्यनाथ, xxii (2) पेज-4042.

बाला, आर. (2006). एजुकेशन रिसर्च, न्यू देहली: एल्फा पब्लिकेशन।

बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (1963). रिसर्च इन एजुकेशन, न्यू देहली प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया, प्राइवेट लि0, पेज-184.

ब्रॉडेनी, एस. बी. (1994). द रिलेशनशिप बिटवीन स्टूडेन्ट्स अचीवमेन्ट्स, स्टूडेन्ट्स एटीट्यूड एण्ड स्टूडेन्ट्स परसेप्सन ऑफ टीचर एफैक्टिवनैस एण्ड द यूज ऑफ जर्नल एज ए लर्निंग टूल इन मैथमेटिक्स, पी.एच.डी. द यूनीवर्सिटी ऑफ साउर्थन मिस्सीपी रिफरेंस इन डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट इण्टरनेशनल, वॉल्यूम-54 नम्बर-8 फेब्रुअरी, 1994, पेज-2886.

भारतीय, संविधान (1984). विधि मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

बिडाल, बी. जे. (1964). दी इन्टीग्रेशन ऑफ टीचर इफैक्टिवनेस, बी. जे. बिडाल तथा डव्ल्यू जे. एलेना (सं.) पूर्व उद्यृत, पृ. 18.

बुच, एम. बी. (1983-89). फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (वॉल्यूम 1 व 2), नई

दिल्लीः एन. सी. ई. आर. टी.।

बुच, एम. बी. (1972). भारतीय विद्यालयों में समायोजन की दशाओं को उन्नत करने की दशाओं का अध्ययन,

दुबे, के. (2012). विद्यालयी व्यवस्थापकीय पर्यावरण के सन्दर्भ में अध्यापक-अध्यापिकीय

के कृत्य सन्तोष का अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध (शिक्षा), सन्दर्भित डी. ई. आई. आगरा।

दीक्षा, (2019). माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता एवं प्रतिबद्धता का अध्ययन,

अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध (शिक्षा), सन्दर्भित डी. ई. आई. आगरा।

दास, यू. ई. (1976). कृत्य-सन्तोष, व्यावसायिक-स्तर एवं आकांक्षा-स्तर, अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध (शिक्षा), सन्दर्भित डी.ई.आई. आगरा।

ऐडीगर, एम. एण्ड डायामार्टी राव, बी. (2007). एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ स्कूल, न्यू देहली: डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।

फेन्टॉन, एल. एण्ड करन, एस. (2005). ए कॉरीलेशन एनालइसिस अमॉन्ग आर्गेनाइजेशनल सिटीजनशिप एण्ड आर्गेनाइजेशन कमिटमेंट इन लॉ परफॉर्मिंग न्यूयॉर्क सिटी पब्लिक हाई स्कूल्स, डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट इण्टरनेशनल, 65 (12), पेज-89.

ग्रिसॉम, जे. पी. (1992). द रिलेशनशिप ऑफ टीचर इफैक्टिवनैस एण्ड सलेक्टेड टीचर डेमोग्राफिक वेरिएवल्स टू स्टूडेन्ट्स एब्सट्रेक्ट इण्टरनेशनल, 52 (9), पेज-103.

गुप्ता, एम. (2008). प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन, एस. एस. श्रीवास्तव (सम्पादक) भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊः इण्डियन ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, 27(1), पृ. 31-35.

कपिल, एच. के. (1981). अनुसंधान विधियाँ, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।

कपिल. एच. के. (1986). सांख्यिकीय के मूल तत्व आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।

कपिल. एच. के. (2001). अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में), आगराः एच. पी. भार्गव बुक

हाउस।

कीफर, पी. एड. (2008). जॉब सेटिसफेक्शन इन यूनियन पब्लिक स्कूल्स इट्स इफेक्ट ऑन अकेडमिक अचीवमेंट, डिजर्टेशन एब्सट्रैक्ट इण्टरनेशनल, 69 (2), पेज-453.

कॉट्जरी, सी.आर. (2004). रिसर्च मेथ्डोलोजी मेथड्स एण्ड टेक्निक्स, न्यू देली: विश्व प्रकाशन, दरियागंज।

माथुर, वी. आर. (1981), मोविलिटी पैटर्न एण्ड प्रोफेशनल कमिटमेंट ऑफ हायर सेकेण्डरी एजूकेशनल एब्सट्रेक्ट, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी. वॉल्यूम नं. 1, पृ. 84-86 जनवरी- 2004.

नटरंजन, आर. (2000). ए स्टडी ऑन स्कूल इण्टरनेशनल क्लाइमेट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ टीचर्स, डी. राजा गणेश (एड0) एक्सपेरीमेन्ट्स इन एजुकेशन, चेन्नई: थ्रिस पी.सी. वैद्यनाथ, वोल्यूम (1), पेज-1015.

नसरीन एण्ड एन्नीस ए. (2014), "टीचर्स जॉब सेटिसफेक्शन क्वश्चनेयर" आगरा नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोनेशन कचहरी घाट।

पद्मानाशाह, एस. (1986). जॉब सेटिफेक्शन एण्ड टीचिंग इफैक्टिवनैस ऑफ सेकण्डरी स्कूल टीचर्स, पी.एच.डी. एजुकेशन एस.वी.यू. डब्ल्यू..डब्ल्यू.डब्ल्यू. गूगल.कॉम।

पाण्डा, यू.एन. (1988). स्कूल मेनेजमेन्ट, न्यू देहली, आशीष हाऊस, पेज-60-68.

पॉल. एवं घोष. (1995). मानसिक स्वास्थ्य एवं विद्यालयी प्रबन्ध का माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य सन्तोष पर प्रभाव, अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध (शिक्षा) सन्दर्भित डी. ई. आई. आगरा।

प्रसाद, आर. (2012). विशिष्ट शिक्षक प्रशिक्षाणार्थियों के आत्म-प्रत्यय, आत्म-विश्वास, शिक्षण-दक्षता एवं भूमिका प्रतिबद्धता पर शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (शिक्षा), सन्दर्भित डी.ई.आई. आगरा।

पारूल, बी. एवं पाण्डेय ए. (2013). प्रोफेशनल कमिटमेंट एण्ड स्टडीज ऑफ सेकेंड्री स्कूल टीचर्स,

भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वोल्यूम- 31, न0 1 जनवरी जून- 2012.

शर्मा, के. एस. (1995). विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण- प्रभावशीलता एवं यौन-भेद के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध (शिक्षा) सन्दर्भित डी. ई. आई. आगरा।

राणा, ए. बी. (1981). प्रोफेशनल कमिटमेंट होम साइन्स कॉलेज टीचर्स इन इण्डिया एण्ड इट्स रिलेशनशिप टू पर्सनल एण्ड प्रोफेशनल करैक्टरस्टिक्स एण्ड आर्गेनाजेशनल क्लाइमेट। थर्ड सर्वे ऑफ इन एजूकेशन (1978-1983), नई दिल्ली एन. सी. ई. आर. टी. पृ. 834.

राय, पारसनाथ (1984) अनुसंधान परिचय, आगरा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन।

सूद, बी. (2011). "प्रोफेशनल कमिटमेंट स्केल" आगरा नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोनेशन कचहरी घाट।

सलमा, एन. एवं बीरमती, एस. (2010). प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता की उत्तरदेयता माँग के सन्दर्भ में अध्ययन, भारतीय शोध पत्रिका वॉल्यूम-29, नं.-2, पृष्ठ-9-8, जुलाई, दिसम्बर-2010.

सक्सैना, सी, एवं कुदेसिया, पी.एम. (2008). विदिशा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत् प्राथमिक स्कूल अध्यापकों का कार्य-सन्तोष मापन, एस. एस. श्रीवास्तव (सम्पादक), भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊः इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, 27 (1), पृ. 36-41.

श्रीवास्तव, पी. (2009). रिलेशनशिप ऑफ टीचिंग काम्पिटेंसी विद टीचिंग एटीट्यूड एण्ड प्रोफेशनल कमिटमेंट, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (शिक्षा), सन्दर्भित डी.ई.आई. आगरा, पृष्ठ संख्या 35-38.

शर्मा, एस. (2010). प्रोफेशनल कमिटमेंट ऑफ टीचर एजूकेटर्स। इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजूकेशनः वॉल्यूम 41 (2), पृ. 165-67 जुलाई 2010.

शर्मा, पी. (2014). माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, प्रकाशित शोध प्रबन्ध (शिक्षा), संदर्भित डी.ई.आई आगरा।

शर्मा, ए. (2015). माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के आत्म-विश्वास एवं भूमिका प्रतिबद्धता का शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (शिक्षा), सन्दर्भित डी.ई.आई. आगरा, पृष्ठ संख्या 27-44.

शर्मा, आर. ए. (1995). शिक्षा अनुसंधान, मेरठः सूर्या पब्लिकेशन।

शर्मा, आर. ए. (2002). शिक्षा प्रबन्ध, मेरठः आर. लाल बुक डिपों

शर्मा, बी. एल. एवं माहेश्वरी, बी. के. (2001). विद्यालय प्रबन्ध, मेरठः आर लाल बुक डिपो।

सोफीनानॉस एण्ड थियोडोर, जे. (2005). द रिलेशनशिप बिटवीन आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन एज रिपोर्टेड बाई कम्यूनिटी कॉलेज एक्जीक्यूटिव सीक्रेटरीज एण्ड एसोसिट्स टू द प्रेसीडेन्ट, डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट इण्टरनेशनल, 66(5), पेज-1673.

सूद, वी. एवं आनन्द, ए. (2010). प्रोफेशनल कमिटमेंट अमंग बी. एड. टीचर एजूकेटर्स ऑफ हिमाचल प्रदेश। जर्नल ऑफ ऑल इंडिया एसोसिएशन फॉर एजूकेशनल रिसर्च वाल्यूम 221.

शर्मा, एस. एवं शर्मा, एस. (2021). शिक्षक प्रभावशीलता मापनी, आगराः एच. पी. भार्गव बुक हाउस।

विसरिया, एस. (1991). मोविलिटी पैटर्न एण्ड प्रोफेश्नल कमिटमेंट्स ऑफ हायर सेकेण्डरी टीचर्स।

फिफ्थ सर्वे एजूकेशनल रिसर्च (1998-92). वॉल्यूम **II,** पृष्ठ 1439- 1440.

वेश, के. ए. (2005). एवेल्यूएटिव टीचर इफैक्टिवनैस एण्ड एवीडेन्स बाई द प्रोफेशनल डवलपमेंट एण्ड एप्रेजल सिस्टम एण्ड द टेक्सॉस असिसमेंट ऑफ नॉलेज एंड स्किल्स (एड0) डी0 टर्कास ए0 एण्ड एन. यूनिवर्सिटी, पेज-857.

विल्ल, ए. एण्ड जे. एन. (2006). द रिलेशनशिप बिटबीन टीचर्स लेवल ऑफ सोसियल इन्ट्रेस्ट एण्ड टीचर एफीसिएन्सी एण्ड देयर डिग्री ऑफ जॉब सेटिसफैक्शन: एन एक्सप्लोरेटरी स्ट्डी, डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट इण्टरनेशनल, 66(3), पेज-858.

यादव के. ए. (2007). सरकारी तथा गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, सुभाष शर्मा (सम्पादक), परिप्रेक्ष्य, नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, 14 (2) , पृ. 103-107.